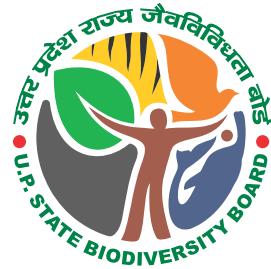


वार्षिक रिपोर्ट
2013-2014



उत्तर प्रदेश राज्य जैवविविधता बोर्ड
लखनऊ

आवरण चित्र : पेन्टिंग- पूजा यादव, ix बी, टी०डी० गर्ल्स डिग्री कालेज, लखनऊ

प्रकाशक:

उत्तर प्रदेश राज्य जैवविविधता बोर्ड

पूर्वी विंग, तृतीय तल, 'ए' ब्लॉक,

पिकप भवन, गोमती नगर, लखनऊ

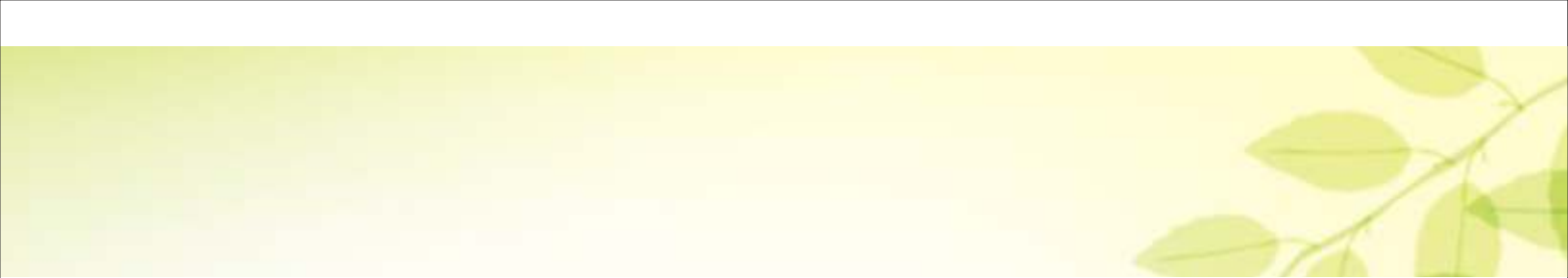
फोन: 0522-4006746, 2306491 फैक्स: 0522-4006746

वेबसाइट: <http://www.upsbdb.org>

ईमेल: upstatebiodiversityboard@gmail.com

विषय सूची

1.	प्राक्कथन.....	1
2.	बोर्ड की बैठकें	4
3.	जैवविविधता प्रबंधन समितियाँ	7
4.	जन जैवविविधता पंजी (पी.बी.आर.).....	8
5.	अनुसंधान परियोजनाएं.....	10
6.	अन्तर्राष्ट्रीय जैवविविधता दिवस 2013	53
7.	जागरूकता कार्यक्रम.....	60
	क. मेढक बचाओ दिवस 27 अप्रैल, 2013.....	60
	ख. विज्ञान एक्सप्रेस, जैवविविधता	61
	विशिष्ट (एस ई बी एस) 11 मई, 2013	
	ग. जैवविविधता उत्सव 16–21 मई, 2013	62
	घ. विश्व पर्यावरण दिवस 5 जून, 2013	64
	ङ वन महोत्सव, 1–7 जुलाई, 2013	66
	च. अन्तर्राष्ट्रीय गिद्ध जागरूकता दिवस 07 सितम्बर 2013..	68
	छ वन्य प्राणि सप्ताह 1–7 अक्टूबर, 2013.....	71
	ज. विश्व वेटलैण्ड दिवस, 2 फरवरी, 2014.....	74
	झ. विश्व गौरय्या दिवस, 20 मार्च, 2014	78
8.	प्रशिक्षण व कार्यशालाएँ.....	80
9.	जागरूकता कार्यक्रम.....	85
10.	मानव संसाधन विकास.....	87
11.	प्रकाशन.....	88
12.	वित्त एवं लेखा.....	90
13.	समाचार पत्रों से.....	94



प्राक्कथन

जैवविविधता जीवन के विविध है इनमें हवा, स्थल, वेटलैण्ड, नदियों व समुद्रों में रहने वाले पौधे व पशु हैं।

जैवविविधता संरक्षण 21वीं शताब्दी के महत्वपूर्ण मुद्दों में से एक है। यह निरन्तर विकास प्राप्त करने की महत्वपूर्ण कुंजी है तथा जलवायु परिवर्तन, प्रदूषण एवं उच्छिष्ट निस्तारण जैसे पर्यावरणी मुद्दों से सम्बन्धित है। वनस्पतियां व पशु जीवन के लिए आवश्यक है। ये भोजन, औषधि एवं वस्त्र, आवास व साज सज्जा निर्माण हेतु कच्चा माल उपलब्ध करवाते हैं। पौधे बाढ़ नियंत्रण, भू क्षरण रोकने एवं जल व वायु से प्रदूषकों को छानने में सहायता करते हैं।

जैवविविधता हमारी भलाई के लिए भी संवेदनशील है। प्रकृति का संसार, भू दृश्यों व दर्शनीय स्थलों का संजाल है। हमारे बगीचों व स्थानीय पार्कों में पाए जाने वाले वन्यजीव भी हमारे लिए मूल्यवान हैं। जंगली पौधे एवं पशु हमें मौसम में परिवर्तन व प्राकृतिक जीवन चक्र का अनुभव कराते हैं। पर्यावरण के स्वास्थ्य के लिए हमारे उत्तरदायित्व को भी केन्द्र में रखता है।

उत्तर प्रदेश एक विहंगम दृष्टि

मार्च, 2011 को 199,581,477 जनसंख्या के साथ उत्तर प्रदेश देश में सर्वाधिक जनसंख्या वाला प्रदेश है। पृथक देश होने की स्थिति में जनसंख्या की दृष्टि से चीन, भारत, यूनाइटेड स्टेट, संयुक्त राज्य अमेरिका व इण्डोनेशिया के बाद इसका विश्व में पांचवा स्थान होता।

भारतीय धार्मिक परम्परा में दो पवित्र नदियों गंगा व यमुना नदियों से सिंचित हमारा प्रदेश पूर्व में बिहार, दक्षिण में मध्य प्रदेश, पश्चिम में राजस्थान, दिल्ली, हिमाचल प्रदेश हरियाणा एवं उत्तर में उत्तराखंड से घिरा हुआ है एवं उत्तर प्रदेश की उत्तरी सीमा नेपाल से मिलती है, जिससे भारतीय सुरक्षा में उत्तर प्रदेश के रणनीतिक महत्व की कल्पना की जा सकती है। प्रदेश का क्षेत्रफल 2,36,286 वर्ग कि.मी. है। क्षेत्रफल की दृष्टि से यह भारत का चौथा सबसे बड़ा राज्य है केवल क्षेत्रफल की दृष्टि यह फ्रांस के क्षेत्रफल से आधा पुर्तगाल के क्षेत्रफल का तीन गुना, आयरलैण्ड के क्षेत्रफल का चार गुना, स्विटजरलैण्ड के क्षेत्रफल का सात गुना, बेल्जियम के क्षेत्रफल का दस गुना व इंग्लैण्ड के क्षेत्रफल से थोड़ा बड़ा है।

उत्तर प्रदेश की वनस्पति विविधता

2932 पौध प्रजातियों के साथ देश की 6.45 प्रतिशत पौध विविधता का प्रतिनिधित्व करती है। द्वितीयक स्रोत से एकत्रित प्रारम्भिक आँकड़े प्रदेश में निम्न पौधों का साम्राज्य पाया गया:—

पौधों का समूह	विश्व में पाई जाने वाली प्रजातियों की संख्या	भारत में पाई जाने वाली प्रजातियों की संख्या	उ० प्र० में पाई जाने वाली प्रजातियों की संख्या	विश्व में पाई जाने वाली प्रजातियों का प्राकृतवास	भारत के सापेक्ष उ.प्र. में पाई जाने वाली प्रजातियां का प्रतिशत
*शैवाल	40,000	7,182	301	0.75	4.19
*कवक	72,000	14,588	935	1.29	6.40
**लाईकेन्स	13,500	2,268	135	1.0	5.95
*ब्रायोफाइट्स	16,600	2,451	72	0.43	2.93
*टैरीडोफाइट्स	10,000	1,236	41	0.41	3.31
*जिम्नोस्पर्म्स	650	69	06	0.92	8.69
*एंजियोस्पर्म्स	2,50,000	17,643	1,442	0.57	8.17
;	4]02]750	45]437	2]932	0.72	6.45

स्रोत: *सैनी एट एल (2011) : पूर्वी उत्तर प्रदेश के विशिष्ट संदर्भ में उत्तर प्रदेश की वनस्पति विविधता उत्तर प्रदेश राज्य जैवविविधता बोर्ड द्वारा प्रकाशित पूर्वी उत्तर प्रदेश के विशिष्ट संदर्भ में उत्तर प्रदेश की जैव विविधता।
 **संजीव नायक व डी.के. उप्रेती (2013)। उत्तर प्रदेश राज्य जैवविविधता बोर्ड लखनऊ द्वारा प्रकाशित लाईकेन्स ऑफ उत्तर प्रदेश (उत्तर प्रदेश के लाईकेन)

उत्तर प्रदेश में प्राणि विविधता

उत्तर प्रदेश कशेरुकी व अकशेरुकी प्राणियों की 2387 प्रजातियों के साथ देश की 2.76 प्रतिशत प्राणि विविधता का प्रतिनिधित्व करता है। राज्य में प्राणि विविधता निम्न सारणी में दर्शाई गई है:-

प्राणि कुलों का समूह	विश्व में पाई जाने वाली प्रजातियों की संख्या	भारत में पाई जाने वाली प्रजातियों की संख्या	उत्तर प्रदेश में पाई जाने वाली प्रजातियों की संख्या	विश्व के सापेक्ष उ०प्र० में पाई जाने वाली प्रजातियों का प्रतिशत	भारत के सापेक्ष उ०प्र० में पाई जाने वाली प्रजातियां का प्रतिशत
प्रोटोजोआ (स्वतंत्र जीवी+परजीवी)	31,250	3,500	41	0.13	1.17
नीमाटोड (सभी)	30,028	2,902	140	0.46	4.82
मोलस्का	66,535	5,169	47	0.07	0.90
अर्थ्रोपोडा (कीट)	10,20,007	63,423	1,445	0.14	2.27

अर्थोपोडा (अरचिन्डा)	73,451	5,850	15	0.02	0.25
मौलस्का (मीठा जल)	35,000	1,129	47	0.001	4.16
पीसेज	32,120	3,022	152	0.47	5.02
एम्फीबिया	6,771	342	25	0.36	7.30
रेप्टीलिया	9,230	526	77	0.83	14.63
एक्स	9,026	1,233	358	3.96	29.03
मैमालिया	5,416	423	87	1.60	20.56
योग	13,18,834	87,519	2,434	0.18	2.78

स्रोत: उत्तर प्रदेश राज्य जैवविविधता बोर्ड लखनऊ द्वारा प्रकाशित वी०डी० हेगड़े व के० वेंकटरमन (2014) की इवेंटरी ऑफ फॉनल डाइवर्सिटी ऑफ उत्तर प्रदेश

जैवविविधता अधिनियम, 2002

पर्यावरण एवं वन मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा 5 फरवरी, 2003 को जैवविविधता अधिनियम, 2002 प्रख्यापित किया गया। जैवविविधता अधिनियम भारतीय जैवविविधता पर सर्वप्रभुत्व संपन्न अधिकार व इसके संरक्षण दुरुपयोग के संरक्षण, जैवविविधता व सहयोगी ज्ञान तक पहुँच सतत उपयोग को नियंत्रित करने की विधिक क्रियाविधि प्रख्यापित करता है। 15 अप्रैल, 2004 को जैवविविधता नियमावली अधिसूचित की गई। अधिनियम की धारा 22 के अनुसार राज्य जैवविविधता बोर्डों के कार्य में शामिल है:

उत्तर प्रदेश राज्य जैवविविधता बोर्ड (यूपीएसबीबी) की स्थापना शासनादेश सं 1498/14-5-2006-57/2006 दिनांक 20 सितम्बर, 2006 द्वारा की गई। अधिसूचना संख्या 570/XIV-5-2010-57/2006 दिनांक 09.04.2006 द्वारा उत्तर प्रदेश जैवविविधता नियमावली 2010 अधिसूचित हुई।

बोर्ड की बैठकें

9वीं बोर्ड बैठक : 25 अप्रैल, 2013

बोर्ड की 9वीं बैठक, 25 अप्रैल, 2013 को श्री वी.एन. गर्ग, अध्यक्ष, उ०प्र० राज्य जैवविविधता बोर्ड की अध्यक्षता में आहूत की गई। इस बैठक में निम्न निर्णय लिए गए:—

- (1) निम्न दो परियोजनाओं को 30.06.2013 तक अवधि विस्तार का अनुमोदन दिया गया :—
 - (क) इंवेटराईजेशन, इम्पेक्ट एसेसमेंट एण्ड रिस्क कम्यूनिकेशन ऑफ इन्वेशिव फिश स्पेसीज इन उत्तर प्रदेश
 - (ख) जर्मप्लाज्म एक्सप्लोरेशन, एसेसमेंट एण्ड डाक्यूमेंटेशन ऑफ फ्रेश वॉटर फिश डाइवर्सिटी ऑफ उत्तर प्रदेश।
- (2) निम्न परियोजना को 30.06.2013 तक अवधि विस्तार के साथ परियोजना की कुल लागत में वृद्धि किए बिना रू० 30,000 के पुनर्विनियोग का अनुमोदन किया गया :—
 - (क) एक्सप्लोरेशन एण्ड डॉक्यूमेंटेशन ऑफ कुकरबिट बायोडाइवर्सिटी एण्ड इट्रेस एप्लीकेशन इन उत्तर प्रदेश।
- (3) वर्ष 2013–2014 में बोर्ड द्वारा निम्न 03 नई परियोजनाओं का अनुमोदन किया :—
 - (क) उत्तर प्रदेश, भारत में वन्य प्राणि विविधता पर आधारभूत सूचनाएं तैयार करना।
 - (ख) भारत में सूक्ष्म जीव विविधता का डाटाबेस विकसित करना।
 - (ग) उत्तर प्रदेश के संरक्षित क्षेत्रों में लाईकेन अन्वेषण व इसके संरक्षण के लिए पणधारियों को संवदेनशील करना।
- (4) वर्ष 2013–14 का प्राक्कलित बजट प्रस्तुत किया गया।
- (5) विद्यालयों की तकनीकी सहायता के माध्यम से बी.एम.सी. द्वारा पी.बी.आर. तैयार करने के लिए अनुमोदित मार्ग निर्देशिका। बोर्ड ने प्रथम पी.बी.आर. तैयार करने के लिए धनराशि अवमुक्त के सम्बन्ध में सूचित किया।
- (6) अनुमति प्राप्त की गई:
 - (क) आनन्द एण्ड आनन्द एडवोकेट्स ने अपने मुवकिकल हिग्नीबॉटम्स इंस्टीट्यूट ऑफ एग्रीकल्चर टेक्नॉलाजी एण्ड साइंस, नैनी इलाहाबाद के लिए जैवविविधता अधिनियम के अनुच्छेद 6 के फरवरी 2008 से जुलाई 2008 के मध्य 2 कि.ग्रा. एलोय बारबाडेन्सिस के उपयोग की कार्योपरान्त अनुमति चाही है। विलम्ब का कारण पूछा गया है।
 - (ख) मैसर्स सनग्रो सीड्स लिमिटेड ने निम्न हेतु अनुमति माँगी है:
 - (i) गौसीपियम हिर्सटम / बारबेन्डेन्स कॉटन काई / ईसी-लॉकरलाइन एन०बी०आर०आई० इवेन्ट 24
 - (ii) स्रोत सबेसीलस थुरिन्जेन्सिस क्राई / ई सी जीन

3 सदस्यीय समिति की सलाह के आधार पर उक्त अनुमति नहीं दी जा सकती।

16.09.2013 को दसवीं बोर्ड मीटिंग :

1. वार्षिक रिपोर्ट 2012-13 के आलेखों का अनुमोदन।
2. अनुमोदित परियोजना लागत में वृद्धि किए बिना उत्तर प्रदेश में लाईकेन प्रगणना परियोजना में रु० 98316 / - के पुनर्विनियोग का अनुमोदन।
3. उ०प्र० के बंगाल फ्लोरिकन (*हाइबरोप्सिस बंगालेंसिस*) के घास प्राकृतवास में वृद्धि किए बिना जुलाई, 2014 तक बढ़ाए जाने का अनुमोदन।
4. बोर्ड को वर्ष 2011-12 में 10, 2012-13 में 07 व 2013-14 में 02 अनुमोदित किए गए 13 परियोजनाओं की प्रगति से अवगत कराया गया।
5. वर्ष 2012-13 के अंकेक्षित व्यय का अनुमोदन
6. वर्ष 2013-14 के प्रस्तावित व्यय का अनुमोदन।
7. निम्न हेतु अनुमति वांछित है:-
 - (क) हुगीबाटनिस इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नालॉजी एण्ड साइंसेज, इलाहाबाद ने अनुच्छेद-7 के अन्तर्गत एलॉय बारबाडेन्सिस के उपयोग।
 - (ख) मैसर्स पॉली जीनोम एक्स (इण्डिया) प्राइवेट लि. ने नीम के 20 कल्चर वायल्स के उपयोग की अनुमति अनुच्छेद 3 व नियम 14 के अन्तर्गत राष्ट्रीय जैवविविधता प्राधिकरण से मांगी है।
 - (ग) आई०सी०ए०आर० (इण्डियन वेटेरिनरी साइंस रिसर्च इंस्टीट्यूट) इज्जतनगर द्वारा शीशम के पत्ती के उपयोग की।
8. वर्ष 2013-14 में प्रदेश के प्रत्येक जनपद में दो जैवविविधता जागरूकता कार्यशाला आयोजित करने का अनुमोदन दिया गया।
9. डा. राम मनोहर लोहिया राष्ट्रीय विधि विश्वविद्यालय, लखनऊ, न्यायिक सेवा प्रशिक्षण संस्थान, लखनऊ, वानिकी प्रशिक्षण संस्थान, कानपुर को शामिल करते हुए व्यापक स्तर पर प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित करने का अनुमोदन दिया जाता है।

30.01.2014 को ग्यारहवीं बोर्ड मीटिंग

बोर्ड की 11वीं बैठक 30.01.2014 को श्री वी०एन० गर्ग, अध्यक्ष, उ०प्र० राज्य जैवविविधता बोर्ड की अध्यक्षता में बैठक आहूत की गई। बैठक में निम्न निर्णय लिए गए:

- (1) अनुमति वांछित :
 - (क) आई०वी०आर०आई०, बरेली ने प्रपत्र प्रस्तुत किया तथा शीशम की पत्ती के उपयोग हेतु अनुमति मांगी गई- सशर्त अनुमति प्रदान की गई।
 - (ख) सी०एस०आइ०आर० ने प्रपत्र प्रस्तुत कर प्लाईवुड व वीनियर उद्योग के अवशिष्ट प्रकाष्ठ कणों को मै० शक्ति इण्डस्ट्रीज, जी०टी० रोड, पुरकाजी जिला मुजफ्फरनगर से एकत्र कर उपयोग करने की अनुमति चाही गई है। आवेदक से प्रजाति का नाम जिसके अवशिष्ट प्रकाष्ठ कणों को

एकत्र करने की अनुमति माँगी गई है तथा उपयोग की जाने वाली मात्रा के सम्बन्ध में पूछा गया है।

(ग) मैसर्स टाटा केमिकल्स, मुम्बई ने प्रपत्र-1 प्रस्तुत किया है तथा विशिष्ट स्थलों (सेण्टर ऑफ एग्री सोल्यूशंस एण्ड टेक्नॉलाजी टाटा कृषि विकास केन्द्र, अलीगढ़ और ग्राम किनौनी, मेरठ) से एकत्र किए गए हैं। जैव संसाधनों (मृदा व जल नमूने) के उपयोग हेतु अनुमति मांगी है। विशिष्ट क्षेत्रों से जैव संसाधनों को एकत्र करने की अनुमति इन नमूनों से उत्पादित किसी उत्पाद के औद्योगिक प्रयोग होने पर लाभों के बंटवारे के शर्त के अन्तर्गत दी जाती है। इस सामग्री के उपयोग से उत्पन्न होने वाली बौद्धिक सम्पदा की साझेदारी सम्बन्धित बी०एम०सी० के साथ भी होगी।

2. बोर्ड अधिकारियों / कर्मचारियों के उपयोग हेतु वाहनों की निविदा का अनुमोदन

3. प्रशिक्षण:

(क) 26-28 दिसम्बर, 2014 को वानिकी प्रशिक्षण केन्द्र कानपुर

(ख) 23.01.2014 को न्यायिक अधिकारी प्रशिक्षण संस्थान, लखनऊ में प्रशिक्षण आयोजित किया गया।

(ग) 31.01.2014 को डॉ० राम मनोहर लोहिया राष्ट्रीय विधि विश्वविद्यालय, लखनऊ में 31.01.2014 को एक प्रशिक्षण आयोजित किया गया।

4. बोर्ड के अध्यक्ष वित्तीय अधिकार में वृद्धि कर पूँजी व्यय में रु० 1.00 करोड़ व राजस्व व्यय में रु० 20 लाख किया जाता है। इसी प्रकार सचिव को वित्तीय अधिकार में वृद्धि कर पूँजी व्यय रु० 10.00 लाख व राजस्व व्यय रु० 5.00 लाख किया जाता है।

5. सचिव, उ०प्र० राज्य जैवविविधता बोर्ड को कोष अंतरित करने की अनुमति दी जाती है। बोर्ड की धनराशि एक वर्ष के लिए राष्ट्रीयकृत बैंक में सावधि जमा की जाएगी तथा परिपक्वता पर ब्याज की राशि बोर्ड की गतिविधियों में व्यय की जाएगी तथा मूल धनराशि पुनः राष्ट्रीयकृत बैंक में सावधि खाते में जमा की जाएगी। बोर्ड के सचिव तत्काल प्रभाव से इस हेतु अधिकृत किए गए।

जैवविविधता प्रबन्धन समितियाँ

जैवविविधता प्रबन्धन समितियाँ (बी.एम.सी.)

जैवविविधता अधिनियम, 2002 की मार्ग निर्देशिका व उत्तर प्रदेश राज्य जैवविविधता नियमावली, 2010 के नियम 21 के अनुसार इस वर्ष दो जैवविविधता प्रबन्धन समितियाँ (बी०एम०सी०) गठित की गईं। प्रथम जन जैवविविधता समिति 11 जून, 2013 को ग्राम लक्ष्मीपुर जनपद महाराजगंज में बनी अन्य प्रथम जैवविविधता प्रबन्धन समिति का गठन हुआ। 26 सितम्बर, 2013 को बैठक आयोजित कर ग्राम मंसूरपुर जनपद शाहजहाँपुर में जैव विविधता प्रबन्धन समिति का गठन में हुआ।

अब तक 9 जैव विविधता समितियों का गठन किया जा चुका है जिनका विवरण निम्नानुसार है:

दृश्य क्षेत्र	लक्ष्मीपुर खीरी	लक्ष्मीपुर	सैदापुर देवकली	15.10.2009
मध्य मैदान	सीतापुर	खैराबाद	नैपालापुर	16.01.2013
	शाहजहाँपुर	ददरौल	मंसूरपुर	26.09.2013
	तराई	बहराईच	बल्हा	नानपारा देहात
बुंदेलखण्ड	चित्रकूटधाम	कर्वी चित्रकूट	बैहार	19.01.2011
पूर्वी मैदान	बराबंकी	बंकी	भिटौली कलां	03.03.2011
पूर्व उत्तरी मैदान	गोरखपुर	पिपरौली	भौवापार	05.04.2011
	गोरखपुर	चरगाँवा	हरसेवकपुर	26.02.2013
	महाराजगंज	पनियरा	लक्ष्मीपुर	11.06.2013

इन जैवविविधता समितियों के कार्यों में शामिल हैं :-

- स्थानीय जनता से विचार विमर्श कर जन जैवविविधता रजिस्टर (पी०बी०आर०) तैयार करना, रख रखाव मान्यता देना।
- जैविक संसाधनों व पारम्परिक ज्ञान की पहुँच का विस्तृत लाभों व उसके परस्पर साझेदारी की विधि की सूचना देने वाले रजिस्टर का रख रखाव।
- अनुमोदन प्रदान करने हेतु राज्य जैवविविधता बोर्ड या प्राधिकरण द्वारा संदर्भित किसी प्रकरण पर परामर्श जैविक संसाधनों का उपयोग करने वाले स्थानीय वैद्य या व्यवसायियों के आँकड़ों का रख रखाव।

जन जैवविविधता पंजिका (पी०बी०आर०)

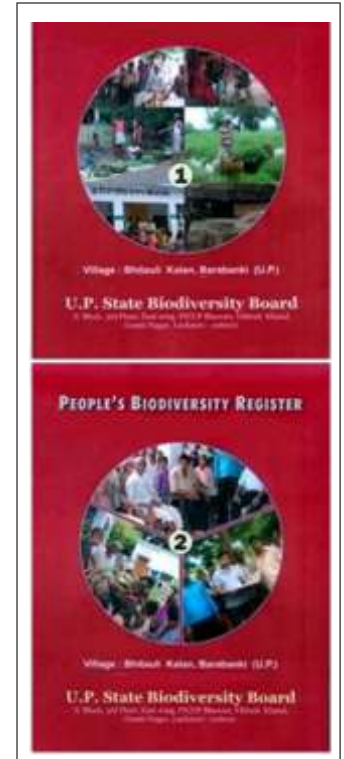
जन जैवविविधता पंजिका (पी.बी.आर.)

जैवविविधता प्रबन्धन समिति का मुख्य कार्य स्थानीय समुदाय से विचार विमर्श कर जन जैवविविधता रजिस्टर तैयार करना है। यह रजिस्टर स्थानीय जैव संसाधन उनसे जुड़ी औषधीय अथवा अन्य उपयोग या पारम्परिक ज्ञान की उपलब्धता व ज्ञान व इनकी संहत सूचना अनिवार्य रूप से धारित करेगा। जन जैवविविधता रजिस्टर पी.बी.आर. स्थानीय जैवविविधता, पारम्परिक ज्ञान व व्यवहार के सहभागी अभिलेखीकरण पर ज्ञान पर स्थानीय समुदाय का अधिकार निर्धारित करने हेतु मुख्य विधिक अभिलेखों के रूप में देखे जाएंगे।

1- इस ग्राम की जन जैवविविधता प्रबन्धन समिति 03.03.2011 को गठित हुई। इस जन जैवविविधता रजिस्टर (पी०बी०आर०) तैयार करते समय विस्तृत सर्वेक्षण किया गया। जैवविविधता प्रबन्धन समिति ने ग्राम के जन जैवविविधता रजिस्टर पी०बी०आर० को 28.06.2013 को मान्यता प्रदान की। भिटौली कलां, बाराबंकी का जन जैवविविधता रजिस्टर दो खण्डों (खण्ड-1 व खण्ड-2) में उपलब्ध हैं। इस ग्राम में कुल 204 प्रजातियाँ अभिलिखित की गईं जिनका विवरण निम्न सारिणी में दिया गया है:

ग्राम भिटौली कलां, जनपद बाराबंकी की अभिलिखित कुल जैवविविधता

कृषि पौधे	39
फसलों की कीट	10
शोभाकार पौधे	09
महत्वपूर्ण वन्य प्रजातियाँ	04
जलीय जैवविविधता	05
अन्य जंगली पौधे	10
वन्य स्तनपाई, पक्षी, सरीसृप, उभयचर, कीट अन्य	45
वृक्ष, झाड़ी, क्षुप, ट्यूबर, घासों, लताएं	00
औषधीय पौधे	06
प्रकाष्ठ वृक्ष	08
महत्वपूर्ण जंगली पौध प्रजातियां	06
फसलों के जंगली रूप	03
भोज्य फसल	02
धूमक / चवर्ण	00
पालतू पशु	06
कल्चर फिशरीज	06
औषधीय महत्व के जंगली पौधे	12
फलादार पौधे	22
तृण	11

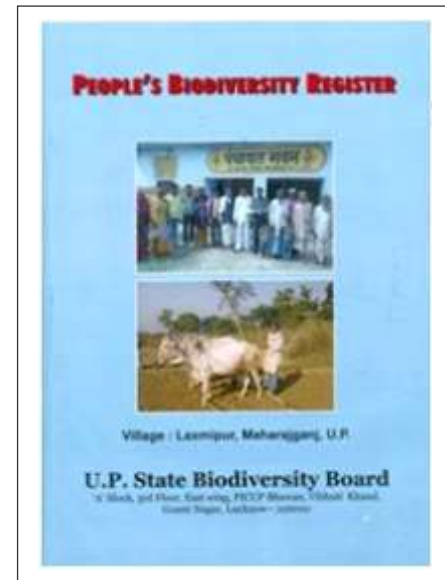


आवरण पृष्ठ : जैवविविधता पंजिका

- ii) इस ग्राम की जैवविविधता प्रबन्धन समिति बी०एम०सी० दिनांक 11.06.2013 को गठित हुई। इस ग्राम का जन जैवविविधता रजिस्टर बनाने के लिए ग्राम का व्यापक सर्वेक्षण किया गया। गाँव की जैवविविधता समिति ने दिनांक 25.02.2014 को जन जैवविविधता रजिस्टर को मान्यता प्रदान की। इस गाँव में कुल 212 प्रजातियाँ अभिलिखित की गई हैं जिनका विवरण निम्न सारणी में दिया गया है:-

ग्राम लक्ष्मीपुर जिला: महाराजगंज में कुल जैवविविधता:

कृषि पौधे	42
फसलों की कीट	10
शोभाकार पौधे	08
महत्वपूर्ण जंगली जलीय पादप प्रजातियाँ	06
जलीय जैवविविधता	06
अन्य जंगली पौधे	04
वन्य स्तनपाई, पक्षी, सरीसृप, उभयचर, कीट अन्य	50
औषधीय पौधे	10
प्रकाष्ठ वृक्ष	10
महत्वपूर्ण जंगली पौध प्रजातियां	10
फसलों के जंगली रूप	02
भोज्य फसल	02
पालतू पशु	06
कल्चर फिशरीज	10
औषधीय महत्व के जंगली पौधे	12
फलादार पौधे	16
तृण	08



आवरण पृष्ठ : जैवविविधता पंजिका

अनुसंधान परियोजनाएं

वर्ष 2013-14 में इन परियोजनाओं की प्रगति निम्नानुसार हैं:

क. पूर्ण परियोजना

1. उत्तर प्रदेश में आक्रमणकारी मत्स्य प्रजाति का सूचीकरण, प्रभाव का आकलन एवं संकट कथन:

यह अध्ययन नेशनल ब्यूरो ऑफ फिश जेनेटिक रिसोर्सेज को सूचीबद्ध करने एवं विभिन्न जलीय संरचनाओं/जलधाराओं में उनके प्रभाव को अभिलिखित करने के लिए कराया गया। उत्तर प्रदेश के 38 जनपदों में 11 भिन्न मत्स्य प्रजातियां व 3 भिन्न संकर प्रजातियां अभिलिखित की गईं। इनमें से कई प्रजातियां विगत वर्षों में मत्स्य उत्पादन की पूर्ति करने हेतु अवैधानिक रूप से डाली गईं तथा कुछ आक्रमणकारी हो चुकी हैं।

80 किस्मों की 58 भिन्न शोभाकार मत्स्य प्रजातियों पालतू एक्वेरियम में सूचीबद्ध की गईं। भिन्न प्रकार की मत्स्य आकार में छोटी, अयन वृत्त सम्बन्धी तथा एक्वेरियम में तेजी से फलती फूलती हैं। गफी, मॉली, प्लेटी, गोल्ड, फिश, बाबर्स, एंजेल, लोचेज, पाकू, पिरान्हा, सकर माऊथ कैट फिश एवं स्ट्रिप्ड कैटफिश लोकप्रिय एक्वेरियम फिश हैं तथा इनकी माँग लोगों में बहुत है। उक्त भिन्न मत्स्यों को विभिन्न उद्देश्यों यथा जंगली किस्मों के सुधार, एक्वाकल्चर, जैविक नियंत्रण एवं मनोरंजन के उद्देश्य हेतु शामिल की गई थी।

कई प्रविष्ट कराई गई मत्स्य विभिन्न नदियों, रिजर्वायर, झीलें व वेटलैंड्स में पाई गईं। उत्तर प्रदेश में विभिन्न नदियों में आँकड़ों के संग्रह से विभिन्न जलीय पिण्ड में निम्न भिन्न मछलियां पाई गईं। विभिन्न नदियों में अभिलिखित की गई मछलियां।:

1. एरिस्टीकथिस नोबिलिस (बिगहेड कार्प)
2. माइलोफारिनगोडोन पिसेस (ब्लैक कार्प)
3. हाईपोथेल्मिसथिस मोलीट्रिक्स (सिल्वर कार्प)
4. सइप्रिनस कार्पियो स्पेकलारिस, नुड्स कॉम्प्यूनिस (कामन कार्प)
5. टेनोफारिनगोडोन आईडेला (ग्रास कार्प)
6. क्लेरिथस गेरीपाईनस (अफ्रीकन कैटफिश)
7. टेरीगोपिलिथिक्स पैराडॉलिस (अमोजाने सेल्फिन कैटफिश)
8. टेरीगोपिलिथिक्स डिस्जक्टिस (वर्मीकुलेटेड सेल्फिन कैटफिश)
9. ओरियोक्रोमिस निलोटिकस (नील टिलपिया)
10. ओरियोक्रोमिस मोजाम्बिकस (मोजाम्बिक टिलपिया)
11. गम्बूसिया एफीनिस (मॉस्क्वटो फिश)
12. पेएसिलिया रेटीकुलेट (गम्पी)





एरिस्टीकथिस नोबिलिस (बिगहेड कार्प)



माइलोफारिनगोडोन पिसेस (ब्लैक कार्प)



हाईपोथेल्मिसथिस मोलीट्रिक्स (सिल्वर कार्प)



सइप्रिनस कार्पियो स्पेकलारिस



टेनोफारिनगोडोन आईडेला (ग्रास कार्प)



क्लेरिथिस गेरीपाईनस (अफ्रीकन कैटफिश)



टेरीगोपिलिक्थिस पैराडॉलिस
(अमोजाने सेल्फिन कैटफिश)



टेरीगोपिलिक्थिस डिस्जक्टस
(वर्मीकुलेटेड सेल्फिन कैटफिश)



ओरियोक्रोमिस निलोटिकस (नील टिलपिया)



ओरियोक्रोमिस मोजाम्बिकस
(मोजाम्बिक टिलपिया)



गम्बूसिया एफीनिस (मॉस्किटो फिश)



पेएसिलिया रेटिकुलेट (गम्पी)

कल्चर के अन्तर्गत पाई जाने वाली मत्स्य

1. बाबॉनीइमस गोनियोनोट्स (सिल्वर कार्प)

2. क्लेरियस गेरीपाईनस (अफ्रीकन कैटफिश)
3. माइलोफॉरिन गोडोन पिसेस (ब्लैक कार्प)
4. ओरियोक्रोमिस निलोटिकस (नील टिलपिया)
5. ओरियोक्रोमिस मोजाम्बिकस (मोजाम्बिक टिलपिया)
6. पग्रासियानोडोन हाईयोथैलामस (सूची कैटफिश)
7. पाइरेक्टस ब्रेकीयोमस (पाकू)



बारबोनीडमस गोनियोनोटस



क्लेरियसगेरीपाईनस



माइलोफारिन गोडोन पिसेस



ओरियोक्रोमिस निलोटिकस



ओरियोक्रोमिस मोजाम्बिकस



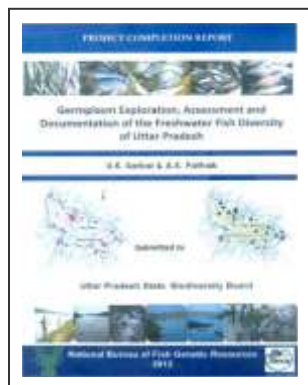
पग्रासियानोडोन हाईयोथैलामस

चूंकि भिन्न मत्स्य जैविक प्रकृति में प्रबल एवं व्यवहार में आक्रामक है अतः निर्धारित किया गया है कि स्थानीय मत्स्य प्रजातियों को जड़ से उखाड़ने की क्षमता है। कई स्थानों में तिलपिया व कॉमन कार्प का आक्रमण हाल में वृद्धि हुई है जिससे नदी के उस भाग में स्थानीय वाणिज्यिक महत्व की प्रजातियों विशेषकर इण्डियन मेजन कार्पस की संख्या में कमी है आक्रामक प्रजातियों के फैलाव के प्रबन्धन हेतु रोकथाम, विनियमन एवं जन जागरूकता की प्रबल समर्थन आवश्यक है।



पाइरेक्टस ब्रेकीयोमस

2. जल की मत्स्य का जर्मप्लाज्म अन्वेषण, ऑकलन एवं अभिलेखीकरण

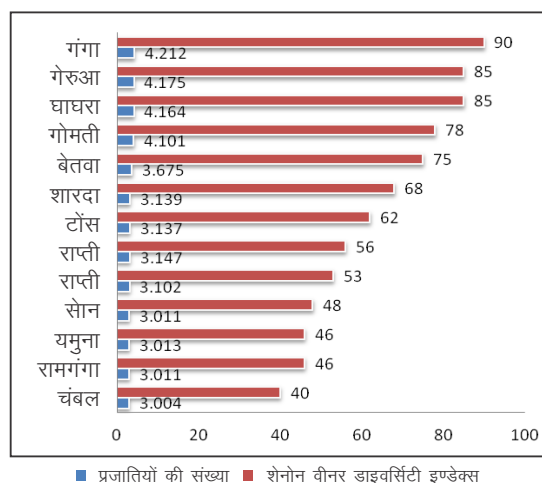


यह अध्ययन नेशनल ब्यूरो ऑफ फिश जेनेटिक रिसोर्सोज, लखनऊ द्वारा किया गया। उत्तर प्रदेश की 12 प्रमुख नदियों व उनकी सहायक नदियों में ताजे जल की मछली का विस्तृत अन्वेषण किया गया। इस अन्वेषण में ताजे जल की मत्स्य की देशज मत्स्य प्रजातियों की 26 फैमिली व 74 जेनेरा से सम्बन्धित 124 प्रजातियों का प्रतिनिधित्व देखा गया। एकत्रण स्थल प्रजातियों का नवीन वितरण एवं उनकी बहुलता का स्थल प्रतिनिधित्व प्रजाति व कुल वार विविधता व वितरण का कुल 9 थीमेटिक जी आई एस मैप तैयार किया गया।

नदियों में कराए गए अध्ययन में गंगा नदी में 90 प्रजातियों के साथ सर्वाधिक विविधता पाई गई जबकि 85 प्रजातियों के साथ घाघरा व गेरुआ नदियों का स्थान रहा। अध्ययन की गई समस्त नदियों में कुल प्रजाति समृद्धता के दृष्टिगत

एक भिन्न सम्बन्ध अभिलिखित किया गया। 5 ताजे जल की मछलियों का नवीन जैव भौगोलिक क्षेत्र अभिलिखित किया गया।

सर्वाधिक संख्या में पाई जाने वाली कुल साईप्रिनिडे (52 प्रजातियां) बगारीडे (10 प्रजातियां), सिसोरिडे (8 प्रजातियाँ) था। उपरोक्त में कुल मत्स्य विविधता में साईप्रिनिडे का योगदान 41.9 प्रतिशत है।



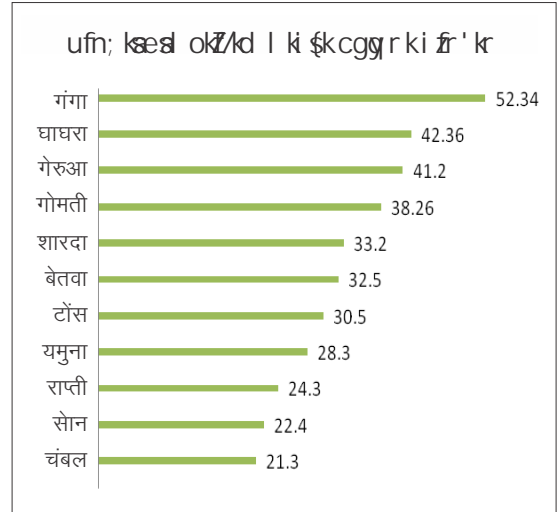
प्रजातियों की संख्या एवं शेनोन वीनर डाइवर्सिटी इण्डेक्स का अध्ययन

नदियों के मध्य अध्ययन में नदी की अभिलिखित प्रजातियों की संख्या एवं शेनोन वीनर डाइवर्सिटी इण्डेक्स का अध्ययन किया गया। गंगा नदी के साथ सर्वाधिक विविधता का प्रतिनिधित्व करती है। घाघरा व गेरुआ नदी में 85 प्रजातियाँ, गोमती में 78 प्रजातियाँ, बेतवा में 75 प्रजातियाँ, शारदा में 68, टोन्स में 62, राप्ती में 63, चम्बल में 52 तथा 50 प्रजातियों के साथ सोन का स्थान है। शेनोन-वीनर डाइवर्सिटी इण्डेक्स अध्ययन की गई समस्त नदियों में सम्पूर्ण प्रजातियों की समृद्धि के साथ एवं भिन्न विविधता की ओर इंगित करता है। 12 नदियों का शेनोन वीनर सर्वाधिक प्रजाति विविधता गंगा में (4.212) तदोपरान्त क्रमशः गेरुआ में (4.175), घाघरा (4.164) एवं गोमती (4.101) में प्रजाति विविधता है।

की सापेक्ष बहुलता जैवविविधता का एक घटक है जो परिभाषित स्थल व सामान्य व दुर्लभ प्रजातियों को अन्य प्रजातियों के सापेक्ष संदर्भित करता है।

गंगा में एकत्र किए समस्त नमूनों में से पुनटिस सराना, लेबो पेनगुसिया, सेक्यूरिकुल गोरा, माइसटस केवासियस, माइसटस ब्लकेरी, एम्बलीफारीगोडोन जैसी प्रजातियों की गंगा नदी में सर्वाधिक सापेक्ष बहुलता प्रतिशत (52.34 प्रतिशत), घाघरा (41.2 प्रतिशत) व गेरुआ (41.2 प्रतिशत) अभिलिखित की गई।

समस्त प्रजातियों (एनत्र124) सम्पूर्ण वितरण स्वरूप उद्घाटित करता है कि 37 प्रजातियां विस्तृत वितरण दर्शाती हैं तथा ये 11 नदियों अर्थात् गोमती, बेतवा, घाघरा, गंगा, सोन टोन्स, यमुना, शारदा, गेरुआ, राप्ती एवं चम्बल में पाई जाती है जबकि ग्लाइप्टोथोरेक्स ब्रेबीपिन्स, सम्बलीसेप्स मैंगोसिस विभिन्न नदियों में सामुदायिक प्रभाव अनुक्रमणिका है



अन्वेषण ने कई ताजे जल की मछली का उ०प्र० के मैदान में गंगा बेसिल में नवीन जैव भौगोलिक वितरण दर्शाया। इनमें ईललोच, पैजियो पैन्जा, ग्लाइप्टोथोरेक्स कोनीरोस्ट्रस, ग्लाइप्टोथोरेक्स टलीचितला, ग्लाइप्टोथोरेक्स काबिया, शिशतूरा रूपीकुला एवं एम्बीसाइप्स मैंगोइस शामिल हैं जो गंगा नदी में प्रथम बार एकत्रित / अभिलिखित की गई।

उ०प्र० की 124 मत्स्य की चित्र पुस्तक बनाई गई है। इस परियोजना में बेसलाईन आँकड़ा एकत्र किया गया है जो उ०प्र० में प्रथम बार ताजे पानी की मछली के वितरण, बहुलता, नई प्रजातियों को अभिलिखित करने की महत्वपूर्ण उन्नत ज्ञान उपलब्ध कराता है।



नोटोप्टेरस नोटोप्टोरस (पालस 1769)
स्थानीय नाम: पत्रा
सामान्य नाम: ब्रॉज फेदर बैक



चिताला चिताला (हेमिल्टन 1822)
स्थानीय नाम: मोये
सामान्य नाम: क्लाउन नाईफ फिश, उत्तर प्रदेश की राज्य मत्स्य



गुडसिया छपस (हेमिल्टन 1822)
स्थानीय नाम: सुहिया एवं छपला
सामान्य नाम: इण्डियन रीवर शाद



गुडसिया बेरीगेटा (डे 1870)
स्थानीय नाम: सुहिया एवं चपला
सामान्य नाम: बमीज रीवर शेड



गेनियोलोसा माम्मीना (हेमिल्टन 1822)
फैमिली: कल्यूपिडे
सामान्य नाम: गंगा रीवर गिजार्ड शाप



सेटीपिन्ना फासा (हेमिल्टन 1822)
स्थानीय नाम: फासा, फॉसी
सामान्य नाम: गंगा रीवर गिजार्ड शाप



सेटीपिन्ना ब्रेवीफिलिस (वेलेन सियेनेस 1848)
स्थानीय नाम: फासा, फॉसी
सामान्य नाम: शार्ट हेयर फिन एनकोवी



सेक्यूरिकुला गोरा (हेमिल्टन 1822)
स्थानीय नाम: गोरा चेला



सल्मोफासिया बाकीला (हेमिल्टन 1822)
स्थानीय नाम: छेल्वा
सामान्य नाम: लार्ज रेजोबेली मिन्नोव



सलमोफासिया फूलो (हेमिल्टन 1822)
स्थानीय नाम: चेल्वा
सामान्य नाम: फाईनस्केल रेजरबेली मिन्नाव



एक्पीडोपारिया मोरार (हेमिल्टन 1822)
स्थानीय नाम: प्रोहिया कॅवाची



बरीलियस बेन्डेलिनिसस (हेमिल्टन 1807)
स्थानीय नाम: भोला, कोरांग, खोक्सा
सामान्य नाम: कोरांग



बारीलियस बारिला (हेमिल्टन 1822)
स्थानीय नाम: बारिल
सामान्य नाम: बेरड, बारिल



बारलियस बारना (हेमिल्टन 1822)
स्थानीय नाम: गलार, धेस



बारीलियस टिलियो (हेमिल्टन 1822)
स्थानीय नाम: बोल्ला, टेलियो बारिल



रायामास बोला (हेमिल्टन 1822)
स्थानीय नाम: बोला
सामान्य नाम: ट्राउट बाब



चेला लाउबुका (हेमिल्टन 1822)
स्थानीय नाम: चल्वा
सामान्य नाम: इण्डियन ग्लास बाब



चेला काचियस (हेमिल्टन 1822)
स्थानीय नाम: बाले, बाले
सामान्य नाम: बार्लेड



चेला अतपार (हेमिल्टन 1822)
स्थानीय नाम: चेल्वा
सामान्य नाम: बाले



एसोमस डोनरीकस (हेमिल्टन 1822)
स्थानीय नाम: डारीकाना



डानिया रेरियो (हेमिल्टन 1822)
स्थानीय नाम: अंजू
सामान्य नाम: जेब्रा डानियो



डेवारियो डेवारियो (हेमिल्टन 1822)
स्थानीय नाम: सिन्द डानियो
सामान्य नाम: पतुकरी बनस्पता



रासबोरा डानीकोलियस (हेमिल्टन 1822)
स्थानीय नाम: डेंडुआ
सामान्य नाम: स्लेन्डर रासबोरा



रासबोरा रासबोरा (हेमिल्टन 1822)
स्थानीय नाम: डनडाई
सामान्य नाम: गैन्जेटिक सीसोरटेल रासबोरा



बेंगाला इलांगा (हेमिल्टन 1822)
स्थानीय नाम: बेंगाला



एम्ब्लाइफारिनगोडोन मोला (हेमिल्टन 1822)
स्थानीय नाम: भोला, धवाई, जालेंगा



तोर तोर (हेमिल्टन 1822)
स्थानीय नाम: महासीर
सामान्य नाम: तोर बाब



टोर पुटीटोर (हेमिल्टन 1822)
स्थानीय नाम: जुंगा, महासोई, सहारा
सामान्य नाम: पुटीटोर महासीर



ओस्टियोब्रामा कोटियो (हेमिल्टन 1822)
स्थानीय नाम: गुर्दा



छागुनियस छागुनियो



पुंटियस छाला (हेमिल्टन 1822)
स्थानीय नाम: सिधारी
सामान्य नाम: स्वाम्ब बाब



पुंटियस सराना (हेमिल्टन 1822)
स्थानीय नाम: पोथी, दराही
सामान्य नाम: ओलिव बाब



पुन्टियस सोफोरे (हेमिल्टन 1822)
स्थानीय नाम: पोथी, सिंधारा
सामान्य नाम: पूल बाब



पुन्टियस टिक्टो (हेमिल्टन 1822)
स्थानीय नाम: पोथी, सिंधारी
सामान्य नाम: टिक्टो बाब



पुन्टियस फुशुनियो (हेमिल्टन 1822)
स्थानीय नाम: पुंटी
सामान्य नाम: पुन्टियो बाब



पुन्टियस कोन्कोनियस (हेमिल्टन 1822)
स्थानीय नाम: पोथी, सिंधारी
सामान्य नाम: रोजी बाब



पुन्टियस टेरियो (हेमिल्टन 1822)
स्थानीय नाम: पुथी
सामान्य नाम: वन स्पॉट बाब



पुन्टियस एम्फीबियस (वेल्लेनसियेनस 1842)
सामान्य नाम: स्कारलेट बेन्डेड बाब



पुन्टियस जेलियस (हेमिल्टन 1822)
स्थानीय नाम: पुथी
सामान्य नाम: गोल्डेन बाब



पुन्टियस पुटियो (हेमिल्टन 1822)
स्थानीय नाम: पुथी
सामान्य नाम: पुन्टियो बाब



सिरोहिनस निरिगाला (ब्लोच 1795)
स्थानीय नाम: नेने, मृगल
सामान्य नाम: मृगल कार्प



सिरोहिनस रेबा (हेमिल्टन 1822)
स्थानीय नाम: रेवा
सामान्य नाम: रेवा कार्प



कतला कतला (हेमिल्टन 1822)
स्थानीय नाम: कतला, भाकुल एवं बोआसी



लाबियो बाटा (हेमिल्टन 1822)
स्थानीय नाम: बाटा
सामान्य नाम: बाटा



लबियो बोगट (साइक्स 1839)
स्थानीय नाम: रोहू, गुबाली, सडसी
सामान्य नाम: बोगट लाबियो



लॉबियो बोगा (हेमिल्टन 1822)
स्थानीय नाम: बोगा
सामान्य नाम: बोगा लॉबियो



लाबियो कालबासू (हेमिल्टन 1822)
स्थानीय नाम: कराउन्वी कालबासू
सामान्य नाम: आरेन्ज फिन लाबियो



लाबियो डाइयोहेलियस (मैक्कलीलैण्ड 1839)
स्थानीय नाम: रोहू एवं बोआल्ला



लाबियो गोनियस (हेमिल्टन 1822)
स्थानीय नाम: कुर्शा एवं कुरी



लाबियो पंगुसिया (हेमिल्टन 1822)
स्थानीय नाम: पुंगुस एवं कनास



लाबियो रोहिता (हेमिल्टन 1822)
स्थानीय नाम: रोहू
सामान्य नाम: रोहू लाबियो



लाबियो फिमब्रिआटस (ब्लोच 1795)
स्थानीय नाम: राचू शाल



लाबियो अंगारा (हेमिल्टन 1822)
स्थानीय नाम: अंगरा, खरसा, थुथुनहिया



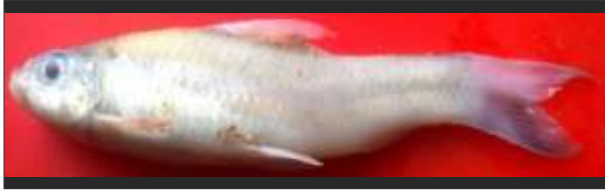
बेगाना डेरो (हेमिल्टन 1822)
स्थानीय नाम: रोहू, अरंगी
सामान्य नाम: कालाबन्स



सीजोथारेक्स रिचर्डसोनिल (ग्रे 1832)
स्थानीय नाम: ट्राउट



सीजोथारेक्स प्रोग्रास्टस (मैकलीले 1839)
स्थानीय नाम: डिन्नावाह



क्रोसोसेलियस लोटियस (हेमिल्टन 1822)
स्थानीय नाम: लतिया
सामान्य नाम: स्टोन रोलर



गर्रा गोटाइला (ग्रे 1830)
स्थानीय नाम: सकर हेड
सामान्य नाम: काला, सितोका



एकनथोकाबिटिस बोसिया (हेमिल्टन 1822)
स्थानीय नाम: गदेरा, छिताई, नटवचेइया



सिशतुरा रूपिकुला (मैकलीलैण्ड 1838)
स्थानीय नाम: स्टोन लोऑच



बाटिया लोहाकाटा (चौधुरी 1912)



बाटिया ड्यूरियो (हेमिल्टन 1822)
स्थानीय नाम: बघुआ, बक्ता, रानीलोआच
सामान्य नाम: बंगाल लोऑच



पोनजियो पोनजिया (हेमिल्टन 1822)
स्थानीय नाम: सिनामोन लोऑंच
सामान्य नाम: कालाबन्स



लेपिडोसिफालीचथिस गुन्टिया (हेमिल्टन 1822)
स्थानीय नाम: गुन्टिया, नकटी
सामान्य नाम: गुन्टिया लोऑंच



रीटा रीटा (हेमिल्टन 1822)
स्थानीय नाम: हुन्ना
सामान्य नाम: रीटा



स्परटा सीनघाला (हेमिल्टन 1822)
स्थानीय नाम: अरी
सामान्य नाम: जाइंट रिवर कैटफिश



स्परटा और (हेमिल्टन 1822)
स्थानीय नाम: शिंघाला
सामान्य नाम: लॉग व्हिस्फर्ड कैटफिश



माइस्टस कवासियस (हेमिल्टन 1822)
स्थानीय नाम: टेंगरा, सुतहवा
सामान्य नाम: गैजोटिक माइस्टस



माइस्टस टेंगरा (हेमिल्टन 1822)
स्थानीय नाम: टेंगाना, टेंगरा



माइस्टस विटाटस (ब्लोच 1794)
स्थानीय नाम: टेंगरा
सामान्य नाम: स्ट्राइप्ड ड्वार्फ कैटफिश



माइस्टस ब्लीकेरी (हेमिल्टन 1822)
स्थानीय नाम: सिंघाड़ा
सामान्य नाम: डेज माइस्टस



हेमीबेगरस मेनोडा (हेमिल्टन 1822)
स्थानीय नाम: मेनोडा, बेलुन्डा
सामान्य नाम: मेनोडा कैटफिश



बोटासियो बोटासियो (हेमिल्टन 1822)
स्थानीय नाम: पताशी



ओमपोक बिनाकुलेटस (ब्लोच 1794)
स्थानीय नाम: पबड़ा
सामान्य नाम: बॉटर कैटफिश



ओमपोक पाबडा (हेमिल्टन 1822)
स्थानीय नाम: पाबडा
सामान्य नाम: पबड़ा कैटफिश



ओमपोक पाबो (हेमिल्टन 1822)
स्थानीय नाम: पाबो
सामान्य नाम: पाबो कैटफिश



वलागो अटटू (ब्लोच एवं एनीडर 1801)
स्थानीय नाम: पधानी



आइलिया कोइला (हेमिल्टन 1822)
स्थानीय नाम: वनस्पति, पत्सी
इसका व्यापारिक नाम है गैजटिक आइलिया



क्लूपीसोमा गरुआ (हेमिल्टन 1822)
स्थानीय नाम: बकेरी
सामान्य नाम: गरुआ बाछा



इयूट्रोपिचथिस वाचा (हेमिल्टन 1822)
स्थानीय नाम: वाछा, बांझू



इट्रोपिच्छीस मौरिस (हेमिल्टन 1822)
स्थानीय नाम: मौरिस वाछा



सिउडेट्रोपियस एथ्रेनोडियस (ब्लोच 1794)
स्थानीय नाम: पोतासी
सामान्य नाम : इण्डियन पोतासी



सिलोनिया सिलोन्डिया (हेमिल्टन 1822)
स्थानीय नाम: सिलोद, सिलोंदिया, वाछा
सामान्य नाम: सिलोद कैटफिश



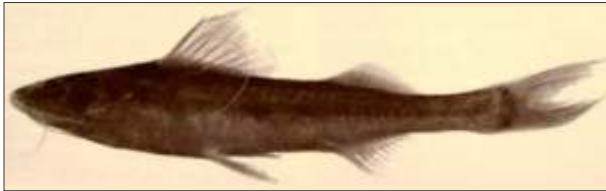
पंगासियूस पंगासियस (हेमिल्टन 1822)
स्थानीय नाम: पंगास
सामान्य नाम: पंगास कैटफिश



एम्बलीसेप्स मैनगोइस (हेमिल्टन 1822)
स्थानीय नाम: छिक्का
सामान्य नाम: इण्डियन टोरेन्ट कैटफिश



सिसोर रहाबडोफोरस (हेमिल्टन 1822)
स्थानीय नाम: पटिया
सामान्य नाम: इण्डियन विहपटेल कैटफिश



नांगरा नानगरा (हेमिल्टन 1822)
स्थानीय नाम: कोसी नानगरा



नांगरा विडिस्सीन्स (गोगरा विडिस्सीन्स)(हेमिल्टन 1822)
स्थानीय नाम: कोसी नांगरा



गगाटा सिनिया (हेमिल्टन 1822)
स्थानीय नाम: तिनकटिया
सामान्य नाम: बाघी



बागरियस बागारियस (हेमिल्टन 1822)
स्थानीय नाम: गोंच
सामान्य नाम: गूँच



बोगारियस यारेल्ली (साइक्स 1839)
स्थानीय नाम: वाघरी



एरेथीस्टिस हारा (हेमिल्टन 1822)
स्थानीय नाम: हारा
सामान्य नाम: कोसी हारा



ग्लाइप्टोथोरेक्स काबिया (हेमिल्टन 1822)
स्थानीय नाम: कन्याकेतन



ग्लाइप्टोथोरेक्स तेलछिट्टा (हेमिल्टन 1822)
स्थानीय नाम: तेलछिट्टा



ग्लाइप्टोथोरेक्स ब्रेवीपिनिस (होरा 1923)
स्थानीय नाम: कन्याकेतन
सामान्य नाम: होरा



ग्लाइप्टोथोरेक्स कोनिरोस्ट्रक्स (स्टीनडा चनेर 1867)
स्थानीय नाम: कन्याकेतन
सामान्य नाम: पबड़ा कैटफिश



क्लेरियस बोट्राछस (लियानुस 1758)
स्थानीय नाम: मांगुर
सामान्य नाम: फिलीपाइन का



हेटेरोज्यूसटस फॉसिलिस (ब्लोच 1794)
स्थानीय नाम: सिंघी
सामान्य नाम: स्टिंगिंग कैटफिश



सिकामुगिल कॉसकासिया (हेमिल्टन 1822)
स्थानीय नाम: लोरहिया



श्राइनोमुगिल कोरसुला (हेमिल्टन 1822)
स्थानीय नाम: हुनरा, पारसीबाता
सामान्य नाम: कोरसुला



जेननटोडोन कैनसिला (हेमिल्टन 1822)
स्थानीय नाम: काउवा
सामान्य नाम: फ्रेशवाटर गारफिश



मोनोप्टेरस कुछिया (हेमिल्टन 1822)
स्थानीय नाम: बाम, सुहिया
सामान्य नाम: कुछिया



माइक्रोगनाथस ओरल (ब्लोच एवं स्नीडर 1801)
स्थानीय नाम: अरल



माइक्रोगनाथस पन्कालस (हेमिल्टन 1822)
स्थानीय नाम: मल्गा, बाम
सामान्य नाम: बोर्ड स्पाइनी ईल



मस्तासेम्बालस अर्माटस (प्लेसीपडे 1800)
स्थानीय नाम: बार्म
सामान्य नाम: जिग जैग ईल



चंदा नामा (हेमिल्टन 1822)
स्थानीय नाम: छानारी
सामान्य नाम: इलोनोट ग्लास परक्लेट



पराम्बासिस रंगा (हेमिल्टन 1822)
स्थानीय नाम: छान्दा
सामान्य नाम: इण्डियन ग्लासी फिश



पराम्बासिस बाक्यूलिस (हेमिल्टन 1822)



जोहनियस कोइटोर (हेमिल्टन 1822)
स्थानीय नाम: कोइटोर क्रोकर भोला
सामान्य नाम: कोइटोर क्रोसकर



जेतहनियस गैजटिकस (तलवार 1991)
स्थानीय नाम: कोइटोकोकर भोला
सामान्य नाम: कोइटोर क्रोएकर



नान्डस नान्डस (हेमिल्टन 1822)
स्थानीय नाम: धेवारी
सामान्य नाम: गैजेटिक लीफ फिश



ग्लोसोगोबियस गिउरिस (हेमिल्टन 1822)
स्थानीय नाम: बुल्ला
सामान्य नाम: टैक गोबी



अनाबस टेस्टूडिनयस (ब्लोच 1794)
स्थानीय नाम: कोई, कवाई
सामान्य नाम: क्लाइम्बिंग पर्च



टाइकोगास्टर फेसियाटा (ब्लोच एवं स्नीडर 1801)
स्थानीय नाम: खोस्ती
सामान्य नाम: बैण्डेड गाउरामी



टाइकोगास्टर छूना (ब्लोच एवं स्नेडर 1801)
स्थानीय नाम: खोलिसा
सामान्य नाम: हनी गाउरामी



छान्ना ओरियन्टा (ब्लोच एवं स्नीडर 1801)
स्थानीय नाम: छाइन्ना
सामान्य नाम: वांकिग स्नेकहेड



छान्ना गछुा (ब्लोच एवं स्नेडर 1801)
स्थानीय नाम: डाकू, छानागा



छान्ना मारुलियस (हेमिल्टन 1822)
स्थानीय नाम: सौउरी
सामान्य नाम: ग्रेट स्नेकहेड



छान्ना पंक्टाटस (ब्लोच 1793)
स्थानीय नाम: गिरोही गिराई
सामान्य नाम: स्पॉटेड स्नेकहेड



छान्ना स्ट्रियाटा (ब्लोच 1793)
स्थानीय नाम: सौउरी, साउर
सामान्य नाम: स्ट्राइप्ड स्नेकहेड



छान्ना स्टीवारसी (प्लेफेयर 1867)
स्थानीय नाम: संगाली, साउर
सामान्य नाम: स्नेकहेड



टेट्राडोन कुटकुशिया (हेमिल्टन 1822)
स्थानीय नाम: गलफुलनी
सामान्य नाम: ओसीलेटेड पफरफिश



एनाबास टेस्टुडिनियम (ब्लोच 1792)
स्थानीय नाम: कोई, कवाई
सामान्य नाम: क्लाइम्बिंग पर्च



ट्राइकोगेस्टर लालिउस (हेमिल्टन 1822)
स्थानीय नाम: गोबरा
सामान्य नाम: बौनी गरुामी

3. उत्तर प्रदेश में कुकरबीट जैवविविधता का अन्वेषण व अभिलेखीकरण तथा इसका क्रियान्वयन

यह अध्ययन सब्जी विज्ञान विभाग, नरेन्द्र देव कृषि एवं तकनीकी कृषि विश्वविद्यालय कुमारगंज ने किया। इस परियोजना में उत्तर प्रदेश में उगाए जाने वाले 20 मुख्य व लघु कुकरबिट पर सामान्य आकारियों लक्षणों व उनमें विचलन यदि कोई हो का निकट से प्रेक्षण किया गया। फलदायक परिणाम प्राप्त व इच्छित करने जीनोटाइप्स को पृथक करने हेतु बहुत से मूल्यांकन जेनेटिक एवं प्रजनन प्रयोग संचलित किए गए।



बॉटल गार्ड (लौकी)



स्पॉज गार्ड (तरौई)



रिज गार्ड (काली तरौई)



सतपुतिया



ऐश गार्ड (पेठा)



स्नेक गार्ड (चिंचिड़ा)



प्लाइटेड गार्ड (परवल)



टाइवी गार्ड (कुंदरू)



बिटरगार्ड (करेला)



स्पाइन गार्ड (खेकशी)



स्वीट गार्ड (खेकसा)



राउण्ड मेलन (टिण्डा)



वाटर मेलन (तरबूज)



मस्कमेलन (खरबूज)



स्नैप मेलन (फूट)



फहतुल/कचरी



लॉग मेलन (ककड़ी)



कुकुम्बर (खीरा)



पम्पकिन (कद्दू)



जुवचीनी

दक्षिण भारत के सिंचित कुकरबिट्स, उनका हिन्दी तथा वानस्पतिक नाम, क्रोमोसोम संख्या, मूल का केन्द्र एवं अन्य सामान्य लक्षण

उत्तर प्रदेश के सिंचित कुकरबिट्स, उनका हिन्दी तथा वानस्पतिक नाम, क्रोमोसोम संख्या, मूल का केन्द्र एवं अन्य सामान्य लक्षण

क्र० सं०	सामान्य नाम	हिन्दी नाम	वानस्पतिक नाम	क्रोमो-सोम संख्या	उत्पन्न होने का मूल स्थान	ब्रेकेट का आकार व उपस्थिति	ट्रेंडिल शाखा	ट्रेंडिल की लम्बाई (सेमी.)	एन्थेसिस समय	फूल का रंग	फूल का याख (सेमी.)
1	बॉटल गार्ड	लौकी	लाजेनारिय सिसेरारिया	22	अफ्रीका	दुर्लभ दृश्य	शाखाएं	20.40	5.00.6.30 प्रातः	सफेद	6.50.8.00
2	स्पॉज गार्ड	तरोई/निनुआ	लूफा सिलेन्द्रिका	26	भारत	मध्यम	शाखाएं	25.3	4.30.5.00 प्रातः	पीला	9.00.11.00
3	रिज गार्ड	अरा तरोई	लूफा एक्यूटांगुला	26	भारत	मध्यम	शाखाएं	25.30	5.30.6.00 अप.	पीला	4.30.6.00
4	सतपुतिया	सतपुतिया	लूफा एक्यूटांगुला	26	भारत	मध्यम	शाखाएं	25.30	5.00.5.30 अप.	पीला	4.00.4.50
5	ऐश गार्ड	पेठा	बेनिनकसा हिस्पिडा	24	ट्रापिकल अफ्रीका/भारत	मध्यम	शाखाएं	15.25	4.45.5.15 पूर्वा.	पीला	7.50.10.00
6	स्नेक गार्ड	चिचिडा	ट्राइकोसेमथस कुकुमेराइना	24	भारत	बड़ा	शाखाएं	25.30	4.30.5.00 पूर्वा.	सफेद	2.50.3.00
7	प्याइंटेड गार्ड	परवल	ट्राइकोसेमथस डोइका	24	भारत	बहुत छोटा	शाखाएं	15.20	7.00.7.30 अप.	सफेद	5.00.6.50
8	इवाई गार्ड	कुदंरु	कोकसिनिया इण्डिका	24	दक्षिण पूर्व एशिया मलेशिया	बहुत छोटा	शाखा रहित	20.25	7.30.8.30 पूर्वा.	सफेद	4.50.6.00
9	बिटर गार्ड	करेला	मोमोरडिका चारानशिया	22	ट्रापिकल अफ्रीका/इ.डो बर्मा	मध्यम	शाखाएं	15.25	4.45.5.15 पूर्वा.	पीला	3.50.4.00
10	स्पाइन गार्ड	खेकशी	मोमोरडिका डोइका	28	अफ्रीका/दक्षिण पूर्व एशिया	बड़ा	शाखा रहित	15.25	8.00.8.30 अप.	पीला	4.50.6.30
11	स्वीट गार्ड	खेकशा	मोमोरडिका कोचिनचिनेन्सिस	28	साउथ ईस्ट एशिया/भारत	बड़ा	शाखा रहित	15.20		सफेद	5.50.7.50
12	राउ.ड मेलन	टि.डा	प्रेसीटुल्लस फिस्टुलोसस	24	भारत	बड़ा	शाखाएं	10.13	4.30.5.00 पूर्वा	पीला	2.00.2.50
13	वाटर मेलन	तरबूज	सिट्रेलस लानाटस	22	ट्रापिकल अफ्रीका	बड़ा	शाखाएं	10.15	4.30.5.00 पूर्वा	पीला	2.50.3.00
14	मस्क मेलन	खरबूज	कुकुमिस नेलो	24	ट्रापिकल अफ्रीका	बड़ा	शाखा रहित	15.20	5.30.6.00 पूर्वा	पीला	3.50.4.50
15	स्नेप मेलन	फूट	कुकुमिस मेलो किस्म मोमोरडिका	24	भारत	बहुत छोटा	शाखा रहित	15.20	5.30.6.00 पूर्वा	पीला	3.50.4.50
16	लौंग मेलन	ककड़ी	कुकुमिस मेलो किस्म यूटिलिसमस	24	भारत	बहुत	शाखा रहित	15.20	5.30.6.00 पूर्वा	पीला	4.50.5.00
17	कुकुम्बर	खीरा	कुकुमिस सेटाइवस	14	भारत	छोटा	शाखा रहित	20.30	5.30.5.45 पूर्वा	पीला	3.50.4.50
18		पहतुल	कुकुमिस केलोसस	14	भारत	बहुत छोटा	शाखा रहित	10.15	5.30.6.00 पूर्वा	पीला	3.00.4.00
19	पम्पकिन	काशीफल/कद्दू	कुकुबिटा मुच्चारा	40	मध्य मेक्सिको	अनुपस्थित	शाखाएं	20.25	4.30.4.50 पूर्वा	पीला	1.50.2.50
20	जुकचीनी		कुकरबिटा पेपो	40	उत्तरी मेक्सिको	अनुपस्थित	शाखाएं	10.15	6.15.7.30 पूर्वा	पीला	12.00.17.00



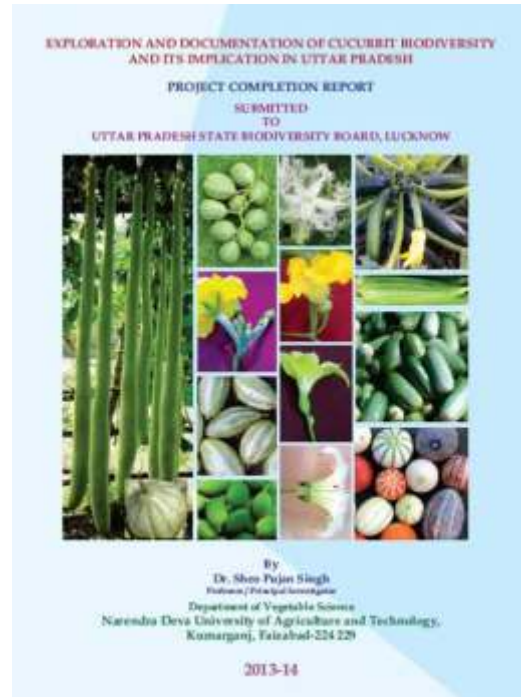
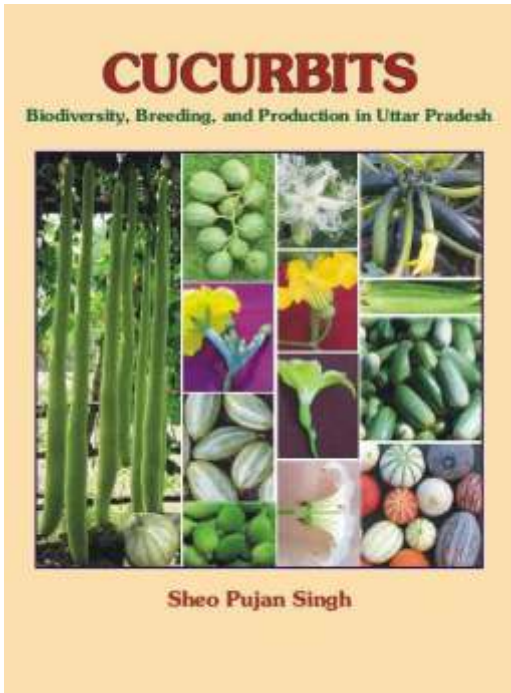
कुकुम्बर की 18 कृषि व एक जंगली प्रजाति के बीजों के रचना, आकार व रंग में खीरा भिन्नता, 2 पहतुल, 3. ककड़ी, 4. खरबूजा, 5. फूट, 6. कुंदरू, 7. टिण्डा, 8. करेला, 9. लौकी, 10. स्नेक गार्ड

fod fl r d hxbzd qj fcV fd Leksd suke d h[kshd sv ub kj | ph

ØCE l a	Ql y	, u-Vh; w-Vh Q\$ kckn	Lk, l -, ; w-Vh d kui j	v kbZ/ kbZhv kj - okj k k h
1	बॉटल गार्ड	नरेन्द्र रश्मि, नरेन्द्र ज्योति, नरेन्द्र धारीदार, नरेन्द्र प्रभा, नरेन्द्र संकर लौकी 4 एफ-1 संकेन्द्र, एन डी बी सी-132, नरेन्द्र पूजा, नरेन्द्र शिशिर, नरेन्द्र माधुरी, नरेन्द्र शिवानी	कल्याणपुर लॉग ग्रीन, आजाद हरित, हरित, आजाद, आजाद नूतन , आजाद संकर, लौकी-1	काशी गंगा काशी बिहार
2	कद्दू	नरेन्द्र अग्रिम, नरेन्द्र अमृत, नरेन्द्र उपकार, नरेन्द्र आभूषण (एफ 1 संकर)	आजाद पम्पकिन-1	काशी हरित
3	प्वाइंटेड गार्ड	नरेन्द्र परवल-260, नरेन्द्र परवल 307, नरेन्द्र परवल 604		काशी अलंकार
4	खरबूजा	नरेन्द्र खरबूजा-1, नरेन्द्र खरबूजा-2		काशी मधु
5	बिटर गार्ड	नरेन्द्र बारहमासी करेला-1, नरेन्द्र बारहमासी करेला-2	कल्याणपुर बारहमासी, कल्याण सोना	काशी दिव्य
6	स्पॉज गार्ड		कल्याणपुर हरी चिकनी, आजाद तोराई चिकनी-2, आजाद तोराई-2	काशी धवल काशी उज्जवल
7	ऐश गार्ड		के ए जी-1	
8	कुकुम्बर		कल्याणपुर ग्रीन	

संस्तुतियाँ :

- (i) संकर का उपयोग कर प्रगतिशील कृषक कुकरबिट का वाणिज्यिक खेती कर रहे हैं। यह मूल्यवान को प्रति स्थापित कर रही है। अतः फैजाबाद का मुथिया खीरा, जौनपुरी करेला, के शुद्धीकरण सुधार हेतु अनुसंधान परियोजना प्रारम्भ करने का परामर्श है।
- (ii) अत्यल्प संख में दुर्गम क्षेत्रों में कृषक सर्वाधिक अविदोहित एवं अत्यन्त स्वादिष्ट स्पाइन गार्ड (खेक्शी) को उगा रहे हैं, खेक्शी की खेती लोकप्रिय बनाने के लिए इसकी खेती को बढ़ावा देना।
- (iii) राज्य के लिए नई फसल जुक्वीनी बड़े शहरों के निकट अत्यन्त सीमित क्षेत्र में उगाई जा रही है। जुक्वीनी को अक्टूबर में बोई गई फसल के परिणाम के आधार पर जुक्वीनी की खेती को लोकप्रिय बनाने व बढ़ाने हेतु अनिवार्य रूप से कदम उठाए जाने की संस्तुति की जाती है।
- (iv) उपभोक्ता व कई उत्पाद कुकरबिट बीज को पोषक तत्वों के मूल्य से परिचित नहीं हैं अतः बहुत बार इसे फेंक दिया जाता है जिससे ये बर्बाद हो जाता है। अतः मूल्यवान बीजों को बर्बादी से बचाने के लिए राज्य स्तर पर कुकरबिट बीज के पोषक तत्वों का मूल्य बताने हेतु जागरूकता कार्यक्रमों की संस्तुति की गई।



पुस्तकों का आवरण पृष्ठ

4. दिशज तकनीकी ज्ञान (टी.टी.के.) पूर्वी उत्तर प्रदेश के विन्ध्य क्षेत्र में कृषि उपज उत्पादन एवं सुरक्षा हेतु एवं अनुभवों का उपयोग:

यह अध्ययन शस्य विज्ञान विभाग कृषि विज्ञान संस्थान बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय द्वारा संचालित किया गया। यह अध्ययन वाराणसी, मिर्जापुर, सोनभद्र एवं भदोही जनपदों में अध्ययन मुख्यतया व्यवसाय कृषि व्यवस्था, फसल एवं जोनीटाईपिक अनुरूपता में निहित अभ्यास, स्थल विशिष्ट पोषक तत्व प्रबन्धन विकसित करना, जल उत्पादकता में सुधार वर्षा जल प्रबन्धन संक्रामक रोगों का प्रबन्धन उन्नत उपकरणों का उपयोग मछलियों व जानवरों का प्रभावी उपयोग जैसी प्राचीन कॉल की कृषि का प्रज्ञान (प्राचीन काल का अभ्यास) केन्द्रित पहुँच कार्यक्रमों में सम्बन्धित कृषि फसलों का कृषकों का सहभागी सर्वेक्षण अभिलेखीकरण एवं स्थल पर अनुभवों को शामिल किया गया।

v / ; u {k es j E j kr O ol k fuEukub kj g



पौधशाला में चावल उखाड़ते हुए



पाटा के पूर्व खेत जुताई करते हुए



खेत में पाटा चलाते हुए



चावल रोपित करते हुए



खेत की जुताई करते हुए



खेत में बुआई करते हुए



खेत में कल्ले तैयार करते हुए



खेत में कुदाल से गदढे बनाते हुए



कुंदरू खेती की पारम्परिक विधि



स्पॉज गार्ड की कुंज व्यवस्था



लेबिया खेती की कोन स्टैकिंग



पान की खेती की पारम्परिक विधि



मच्छरदानी से पौधशाला सुरक्षा



प्लास्टिक शीट से पौधशाला सुरक्षा



कीटों से सुरक्षा हेतु फसल के फेटेरिया



कीट से सुरक्षा हेतु मूंग बीन+रागी



गनी बैग के साथ मल्लिचंग



कुच बनाने की पारम्परिक विधि



पटुआ से रस्सी निर्माण



खेत में परम्परागत विधि द्वारा चावल तैयार करते हुए



औषधि के रूप में केस्टर पत्ती व तेल



औषधि के रूप में धतूरा



औषधि के रूप में मदार



औषधि के रूप में जंगली की लोकेसिया



औषधि के रूप में मेंहदी



औषधीय सब्जी के रूप में महुआ फल



मृदा कठोरीकरण हेतु भेड़ चरान



चावल से पत्थर पृथक करने की पारम्परिक विधि

परिणाम:

1. कम वर्षा वाले क्षेत्रों में विभिन्न सूखा प्रबन्धन अभ्यास में चावल की फसल का प्रतिस्थापन, मौसम में विलम्ब से बोया गया जुआर/बाजरा चावल से (प्रारम्भ में जीवन बचाने वाली सिंचाई (3 से०मी०) करने पर भी) से बेहतर है।

2. रिज/रेन्ड सोइंग पंक्तियों व समतल पर चावल व पिजन पी (रिज) इण्टर क्रांपिग पर्ल बाजार से बेहतर है। यह अन्य उपयोगी समतल इन्टरक्रांपिग एवं मिश्रित खेती से उत्तम है।
3. पोषक तत्वों (उदाहरणार्थ 2प्रतिशत यूरिया) का पत्तों पर छिड़काव।
उपयोगी विकल्प (विन्ध्य क्षेत्र)



चावल को प्रतिस्थापित किरता
(पर्ल बाजरा) (रेन फेड)



चावल +पिजन पी अन्तरर्वेती (3:2)



धान + ओकरा अन्तरर्वेती (प्रतिफल देने वाली)

4. उच्च मूल्य की कृषि फसलें/सब्जियां सामान्य फसल/खेती की तुलना में सीमित मृदा नमी की स्थिति में कम अवधि में अधिक प्रतिफल देने वाली पाई गई।
5. पूर्वी उत्तर प्रदेश में विन्ध्य क्षेत्र की अंडर रेन फेड स्थिति में चावल की सहभागी किस्म अन्यों से बेहतर तथा वीरेन्द्र व अंजली के समान है। पाई जीनोटाइप्स को लाने की आवश्यकता है।
6. इस क्षेत्र में सिंचित कृषि व्यवस्था में आँवला+पिजन पी व्यवस्था अमरुद+हरा चना, आँवला+तिल आर्थिक रूप से इसके पश्चात अधिक लाभदायक है।



आँवला+पिजन पी



अमरुद+हरा चना



बांस की छड़ी के साथ केले के वृक्ष



भैंस आधारित व्यवस्था

7. इस क्षेत्र के कृषकों की आजीविका सुरक्षा के लिए एलीफैण्ट फुट (सूरन) चिरन्तन (सस्टेनेबल) विकल्प है।
8. जुताई के दौरान मृदा की उर्वरता में सुधार व जल रोकने की क्षमता में वृद्धि नीम/महुआ/करंज केक का प्रयोग यह नीमाटोड्स को नियंत्रित करने का भी कार्य करता है।
9. गौ मूत्र+ नीम/मिर्च/धतूरा का उफना मिश्रण छानने के उपरान्त के माध्यम से कीट व दीमक प्रबन्धन।
10. खाद्यान्न के भण्डारण हेतु नीम की सूखी पत्ती का उपयोग। इनके अतिरिक्त भण्डारण में नीम/पुदीना/स्वीट फ्लैग पत्तियां/पोगामिया पिन्नाटा का भी उपयोग सूक्ष्म जीवधारी विरोधी पदार्थ की तरह कार्य करता है।
11. खाद्यान्न आलू, मक्का के मोटे दाने के भण्डारण व भोजन सामग्री पैक करने के लिए बांस की डंडियाँ से बना व अन्दर की ओर गाय का गोबर जुता हुआ पात्र का उपयोग करते हैं।
12. हल्दी चूर्ण या सरसों/कैस्टर तेल का मिश्रण द्वारा छाल का भण्डारण



प्रायोगिक एकल में आई०टी०के० सीखने के लिए दक्षता विकसित करते हुए

13. भूमि के नीचे गद्दा खोदकर कृषि बीजों का भण्डारण। भूमिगत गद्दे में घड़े को गाड़कर गद्दे के ऊपरी भाग को राख व मृदा से ढक कर शून्य ऊर्जा शीत कलू सृजित करते हैं।
14. कम सांद्रता का गौमूत्र छिड़काव का ऑकड़ा एकत्र करने पर ज्ञात हुआ कि गौमूत्र के उफने (फर्मेन्टेड) (सात दिन) का छिड़काव मिर्च व बैंगन के वृद्धि मानको को बढ़ाने व अंतिम रूप से उत्पाद में वृद्धि करने हेतु सर्वाधिक प्रभावी है।

(ख) वर्तमान में चल रही परियोजनाएं:

निम्न परियोजनाएं बोर्ड दिसम्बर 2012 में दो वर्षों के लिए स्वीकृत की गई थीं। प्रत्येक परियोजना की प्रगति का संक्षिप्त विवरण निम्नानुसार है:-

1- *Å i j h x k d s i k p t u i n k s i k r i k n i i z k f i d k l p a t j . k j m u d h i k l f k r , o d k r Q l y k d h [k s h d s k s Q y d k v k d y u %*

यह परियोजना सी एस आई आर सेण्ट्रल इंस्टीट्यूट ऑफ मेडीसनल एण्ड एरोमेटिक प्लांटस लखनऊ द्वारा किया जा रहा है।

मुख्य उपलब्धियां

1. उत्तर प्रदेश में लखनऊ, बाराबंकी, सुल्तानपुर, अमेठी जनपदों में भ्रमण व सर्वेक्षण किया गया। लगभग 59 प्राकृतिक जंगली व खेती की जाने वाली सुगंधित प्रजातियां एकत्रित की गईं। *एनिसोमिलेस इण्डिका, हिण्टिस सुआवेलेन्स, नेयेटा हिन्दोसताना, ओसीमम अक्रीकमम, ओ० बेसीलिकम वर, बेसीलिकम* (कपूर समृद्ध) *पोगोमोन बेंगालेंस, सल्विया प्लेबिया* एकत्रित व प्रविष्टि कराई गईं।
2. सर्वेक्षण व एकत्रीकरण कार्य के समय ओसीमम प्रजाति में विविधता प्रेक्षित की गई। सर्वेक्षण के दौरान ओसीमम की विभिन्न प्रजातियां यथा *ओ० टेनियूप्लोरम* (हरा व बैंगनी प्रकार), ओ. बेसीलिकम (मेथिल चेविकोल व मेफिल चिनेमेट समृद्ध) दो केमेटाईप अर्थात् लिनालूल समृद्ध एवं कपूर समृद्ध ओ. बेसीलिकम तथा नींबू की सुगंध वाली / मधुरगंध वाली ओसीमम की प्रजाति एकत्रित की गईं। इस नींबू सुगंधित प्रजाति अमेरिकानम एल के रूप में त्रुटिपूर्ण रूप से ओसीमम अमेरिकानम एल के रूप में त्रुटिपूर्ण पहचान की गई थी। गहन अध्ययन व परीक्षण के उपरान्त इसे ओसीमम अफ्रीकानम लोर (पर्यायवाची *ओ० जाइटोरमविस, पिलोसम वाइल्ड, ओ० अमेरिकानम* (सेसू अनुसंधानकर्ताओं द्वारा) पुष्पांगदन एवं सोबती) प्रमाणित किया गया।
3. इन जिलों में सुगंधित फसलों के उत्पादकों / कृषिकों से विचार विमर्श किया गया। पिपरमिण्ट, तुलसी, पामरौजा व वेटीवर मुख्य सुगंधित फसले हैं। बाराबंकी सुगंधित तेलों विशेषकर पिपरमिण्ट तेल उत्पादन का केन्द्र है तथा पिपरमिण्ट के प्रकार की औषधि व पिपरमिण्ट तेल के उत्पादन व कृषिकरण क्षेत्र सर्वाधिक है, इसके बाद लखनऊ का स्थान है। सर्वेक्षण के दौरान पाया गया कि कृषि तीन मुख्य फसलों अर्थात् चावल, लाही, मेंथा, चावल, गेहूँ-मेंथा एवं चावल-आलू मेंथा की खेती करते हैं।
4. पामरौजा (*साइम्बोपोगोन मार्टिनी*) द्वितीय मुख्य फसल है तथा तेल गुलाब से मिलती जुलती सुगन्ध (जेरानियोल एवं जीरानिल एसीटेट) के कारण साबुन, इत्र व प्रसाधन उद्योगों में वैश्विक स्तर पर उपयोग किया जाता है।
5. *मेथिल चेवीकोल* व *मेथिल सिनामेट* की उपस्थिति के कारण वाणिज्यिक रूप से उगाई जा रही भारतीय तुलसी (ओसीमम बेसीलिमम) की सी०आई०एम० सौम्या किस्म के सुगन्धित तेल का उपयोग दवाई उद्योग में किया जा रहा है। विगत वर्ष तेल के अधिक उत्पादन के कारण तीव्रता से रू० 850 से गिरकर रू० 350-400 प्रति किग्रा की दर से रह गया जिसके परिणाम स्वरूप इसके बुवाई क्षेत्र में 1/6 भाग की कमी आई।
6. सीमैप में महत्वपूर्ण सुगंधित प्रजातियों का रासायनिक नक्शा बनाया गया है।